

1284

LIBRARY

UNIVERSITY OF CHICAGO

1284

1284

1284

Handwritten text in a script, possibly Indic, on aged, stained paper. The text is arranged in several lines, with some characters appearing to be in a different script or dialect. A prominent red stain is visible in the center of the page.



स्वस्ति श्रीर न का यामो वा या वरा ता इ प्री द्या पा र्क ७ यो वा गा
नि ते का न ई र व द वि न का रिः सि व ना रा य न उ ठि म धा न
श्री वं प्रा दे वि द रि स न पा ७ः **शु** द धु ता ल आ न ज प हार
श्री वं प्रा दे वि वा ठः ग ने स्था न **र**ः श्री ग ने ना य ठ अं ग र
ले होः प्र ष पे ग रा मि च र दु ध न उ ठि न पा
ना थः पा न सु पा रिः रा षि ठा न्ये ना ना का च
वा नि वा ध नः प्र भा व ठि पृ ह र स कि नि रु
भा यि र व द र स न पा ७ः ई र व गु ना रा य न

श्री

धनु म न्न ले ७ ठा रु ला पा रः सि व नि
उ रिः पा द पं दु उ पा व पो षो रिः ग स
व ति व ना रा य न अ रु दु बाल ॥ स्व स्ति
जे ठे स ते ठ तो ल श्री ज तो ल श्री त ठे ह रि ॥ अ ठो ह रि त ले
ध मि त तो ज य ॥ १ ॥ ये तो न न्या को दः स ल न य का ठा
स दि नु ॥ जा ठा ल श्री व स रं ता हाः वि स्र व स दि ता हा ध मि व
जा ठा ध मि व स दि नु ता हा ज त हो ला ध मि उ म र ध मि लि ल मि
थिं वि ति ग य न न हि ल श्री तु म्ने ज्ञा से व स न न ल य लो ग रं य न

॥ की घत मा वा स व्या प्रागदिनो ॥ कति मनुष्य भन्ना दोसु दुनुः वति म
कं गालहं नं ॥ क्यप्रवते तोति मि फल परि होः ये ति धर्म तेल ली धि वि ति
गम्या ॥ तवल लकी कहं दि भयिः सकन वा स दिनु नदिनु कार न सजन
दम कहं दु मुउ हो वल्लः ॥ जो उस्त न ना के सुत ना ॥ जो स वतु तना ॥ रि
॥ जो ॥ स वतु तग गन्या ॥ जो ॥ स वं वल ॥ ष का वा को पुत्रः ॥
गानः मि भा मा ति पि रा वन्या ॥ घर न व र र न्याः व ति ग र गु न
॥ जो पि या को ठो लि या कोः स भा र न ग न्या ॥ जो धो ले या ने
भाव त भ या कि ॥ प्रंग मा म य ल कु विल भ या कि ॥ क प र
ह मा के स कि जि रा व न्या ॥ प्रा प मा परि का

प्रम जे मा न्याः मा ना पि ना को त्या न जा न्या ॥ सिल म मा द न
ली ल का घा मा म व सि न भ तिल की को म्रा गा हुं न भ य
मा भु त वा स ग हुं न ॥ अ ति धन स व ति दु र प र ह र ज य
पुरुष ले श त दि न क मा या प ति मं नु या ति बहु ते हो न ॥ प्रा मा नि
विं द ॥ ग या को दे वि दे न ॥ ज सो त ता या का ता उ मा ता या नि ता ले नु
॥ त ले ग रि भु त प्रे त ले षा इ जा नु द नु ॥ य ला न ल दि न भ या का लु क
म व ति न भ ति ॥ म दि न ल की ले वि ला क हि नु ॥ ॥ इ ति श्री ध र्म ल का सं क
प्र मो ध्य ॥ ॥ त स श्री उ वा च ॥ हे ध र्म श्र व ल ज न को ल हे न क दुः वि मा
मुं न ह वो च ॥ जो स मि त ल व व न ॥ जो स मा व न ॥ जो स को मि त

६॥ जो सुको ग्राह्य औरै ॥ जो सै सिद्ध वंशी ॥ जो सुगमि र ॥ जो सु ॥
वि वं न ॥ जो सु ये ठल दे न ॥ जो सु ग्रा फा जाः प्र ह व न की मा र ह्या कि ॥ जो
प्र सु क त ह न ग र्पा जो सु सु घ मा ई सि त र ह न ॥ जो सु द न ब ह ॥ दे न
के न तु नुः सु त्र ज न ते ये क प्र ह र हं दे उ धु नुः बा हि र जा नुः द टि व न लि
प्र ला न र्गि नु सु वि तु नुः न व मि त र बा हि र व ठा र न ॥ क म न को र न
* ला व नु ॥ त वा दे वी र न र्गि ना को ला सा ग नु ॥ त व न र्गि र
व नु ॥ त म्प्रा प नः स्वा मि को से वा ग नु ॥ क प रा ग्रा ग मा म दे ल
र सु य र ग र लि मि पो मि रा प नु ॥ त व नं सा म

रि नो सा र व नु ॥ प ह ले प वा र स्वा मि क न पु वा य ॥ क ॥ ६ ॥ प्र फ ल
नु ॥ आ म र न स्वा मि क न दे व ता मा न्यो ई मी नु ॥ ये सि ल क
भ निल क्षि ते ध र्म थि वि स्ता र वि ति ग रि नु ॥ म व स्वा बा व र म
ता भ न्याः अ ने क द्र व्य अ ने क ध र्मः अ ने क क म ॥ अ ने क अ ने क अ न ध र्म
सः अ ने क रू प अ ने क सि प अ ने क गु नः ध न सं प ति त्रि त र वा र
= रि ष्ट न हो ला ॥ न नि वि ति ग रि नु ॥ ॥ इ ति श्री ध र्म लक्ष्मी सं वा दे वि ति मे
। ध्या य ॥ ॥ ॥ ध र्म उ वा दः ॥ के रि ध र्म प्रार्त्त न ला ग्ना हे ल क्षी सि मि ल न म क हं
दु सं नु हो ला ॥ ध का दे ल मा हा ये मि ल ते प्र ा ङ्ग स्वा मि क न रि स ते ना

४ पाप ले नाथ का हाज सो प्रब भयोः प्रबटे हो भयो॥ प्र काज माहा ३७
किउरु नि को ज हो ला॥ प्रा न्ना त्या मि हा दि अरु प्र न्ना काः प्रबटे रि कु चित्त
मनगरलितः कोठ हो लिः लाठ हो लिः वो को लि हो लि॥ प्रा फ न्ना ३७
वनः ननि को मानिः सु को तो गुप्तातिर वि न लाई ग या का पाप लेः मा
ज सं म न के को कि रो नै ल हनु दं॥ यो सो हो ला न नि ल ल्ही द न द
त क ह्या॥ ॥ इति श्री धर्म लक्ष्मी संवादे श्रि ति ध्या य॥ ॥ १ ॥
के रि धर्म कहं दा न पा॥ हे लक्ष्मी सुनु ह व लः॥ सृ जन को
लि धर्म लक्ष्मी प्रा न्ना त्या मि न न्नः नै वा दे पि प टि

सदेव ता सप्त सतिर्थः सप्त सदानः सप्त स पुनेः सप्त स न्नः सप्त स न्नः
सप्त स न्नः सप्त स न्नः सप्त स न्नः सप्त स न्नः सप्त स न्नः सप्त स न्नः
॥ द्वि ति य गृ हा धर्म गनुः सृ जन ले वि रा ना पुषेः कन दे पि कनः सृ ज
सि पुष ग रि हे या प नि व दो पा ट क ला ग धः पा ट जा नि कनः त्या मि को
ते व रु ते ग रि गनु॥ य स पु न्न ले म स लो क मा हा लु ज सं ग तिः प्र न्न
क मा हाः व रु ते ना ज प मा नि को ज हो ला॥ जे जे सं म पु ला जे ना तर ल
प्र व र ति धन वं जी धर्म वं ति गु न व तिः ज स व तिः भ ई ह लिः स व क र
को स म पु न्न भ ई ह नु दं॥ त स का र नः त्या मि को ते वा गु न भ न्न मा हा

॥ ॥ इति श्री धर्म लक्ष्मी धर्मसंवादे चतुर्थ अध्यायः ॥ धर्म उवाच ॥ धर्म
लक्ष्मी धिं श्रावणान्ताः पूर्व उमिका कथं ता केरि मन्त्रं दुः सुनुत वं स ॥ वं
न्यादान गत्या को पुन्य फलपतिः पापं निमज्जते दुः ॥ केरि मनु वेले सुनि
दे उदा मालिक नः कं न्यादान गुणैः स्तः मुकु कर्तव्य दे पाप कर्तव्य
लवा पुका वृद्ध माहाः साठ जं सं प्रा व माहि जै र ह द द्या ॥ कं न्यादान
गुवा ई ला इति हा गठ ना व न स मितुः गरि बानः ल द द्या ॥ न्यादान
ल को ल रूप धनि स द द्या गरिः कं न्यादान दे व सा ॥ न्यादान
स्वर्ग मोक्ष वा स हो ला ॥ यो पु ने यो ध जा नि जु वा ई दे

गये सा य स पु न्ये को फल क तो हो ला म न्या ॥ न जा र सां न भोजन
दि या जति को पु न्य हो ला ॥ ॥ गो स त ग त्या जति को पु न्य हो ला ॥ ये लो
पु न्य जा नि धर्म गर ताः शानि नै मोक्ष हो ला ॥ इति श्री धर्म
लक्ष्मी संवादे पंचमो अध्यायः ॥ धर्म उवाच ॥ ॥ हे लक्ष्मी पुनः
ममागत्या को पापः पशु विह गत्या कोः ये स स उर्म माहा ई प्रा
दं ॥ सुनुत वत्तः लो हो वो त्या का पाप ले गो र को उर्म हो ईः का लो
हो त्या को पाप ले बहि लो हं ॥ भु मि हो त्या का पाप ले लो हं ॥

हं हं : यो स क वो त्या का पा प ले : ला ठो नै जं हं : क या स वो त्या का पा
प ले : आ ग मा से तो कु सि ठ व जं हं ॥ ता वो वो त्या का पा प ले : आ ग मा
व व ति रा को लो ग हं हं : ॥ सो र्द पृ थ प वो त्या का पा प ले : द हं हं
ल हं हं : ॥ दे व ता को गुरु को नि दा ग त्या का पा प ले : गु गु ति
नि दे षा सि धि ग त्या का पा प ले र्द थो क नि र्क ल नै
जो ह ग त्या का पा प ले : अ र्त्री नै नि सं ता न हं हं : ॥
रि : आ प र्ना : वो द र न त्या का पा प ले : अ न हं हं

य ति जा नि त्स्त्रि ध र्म क र्म ग त्या ये न लो क मा ता स र्ग लो क
क मा ता : स्व र्ग लो क वा स हो ला ॥ ॥ इ ति श्री ध र्म लो क
मो ध्या य ॥ ॥ श्री से व त् १४२५ भा द्र सृ दि १ लो उ १ थो सा पु
या सा पू जु ल स ध ना म्भु भ वा म म दो ष न दि य तो : स
रा ग अ सु ति ता ला ष्ज ति अ इ स्वरि के व दं : दं ल दा या या दे वि स्वरि के
स्व सि श्री मि ति सा ठ न रु ति

स्यसि श्रीः पिनास सुधा कौकशा लिख्यतेः स कपुर पठन न न न न
गरिद्रुहेदुः तसैन गरिमाः रेकसुने रुद्रपादेः नाग गता को
दंतेः गाईवालिमातु क्लाईः सापुपिदिमावस्था कोद्रुहे दंतेः
ईवालिदेभिः चधिघर वाजु था न माः साईः जु न वेदहि वादु मा
सुर्पः सप्यनिलेः देरा वनाईः फुल पाहिरा था न माः सप्यनिलेः
दंतेः देरा पतिः भक्ते दंतेः तैसै विच माः सप्यनिलेः
नि न ह्वा कोः फुल पति पुता को दे पठाः सप्यनिलेः

प न योरः साके पुनिरुद्र पादे ते उं न दाई रा था को दंतेः
तैसै सप्यनिलेः विषहा लिदिई दंतेः तै दहि जे न न
दंतेः सदै सप्यनिलेः क्वा मुना का वोठ सा मुं ना था न
निरुद्र पादे तै हे दीठाः थोकि दे बे न दंतेः जे पुरः हे ना जे न न
लकाः जा हा नः सप्यनिलेः क्वा द्वा द्वा नः तै सै सप्यनिलेः
नि जा न्यारः ते रा पतिः भक्त ह व स भनि सरा प्रग थाः निई निदि ता
दिः क्वा मुना का वोठ सादिः सुवदेभिः जे दहि का स हा था न
तै जा सा दहि पाता जे सा शु क्वा को दहि रा पो ल ता न न ताई

Handwritten text at the top left of the page.



228



Small handwritten text or label below the grid diagram.



Handwritten text to the right of the central plant illustration.

A long line of handwritten text spanning across the middle of the page, below the plant illustration.

Vertical column of handwritten text on the left side of the bottom section.

Large block of handwritten text on the right side of the bottom section, organized in several lines.



॥ हे सित संवरः कलपोल भोः ॥
 काताः मसानसंदिताः उदलधुमसंग
 ॐ यासगुलिनकुलाः विभुतिनकुलः
 स्वाभिः ध्वयेगधेजुलाः हे सित संवर कलपोल भोः
 ॥१॥ सलकिसिविरसिंधः मनसमयेलाः वलमदुज्यापु
 पुसाकायदुषविलाः हे सितः ॥२॥ त्रीसुरदं वलपोल
 जोनाजयमाताः ॥ नावगिरतलयेलायगिदतल

रसदायः प्रतिरसतालाः हे सित संवरः ॥३॥ गवरियाति
 लाहिलाः ॥ हिरामोतिमालाः धर्मालाहिलाः कोवाधाव
 नेरसिरमालाः हे सित संवर कलपोल भोः ॥४॥
 लाफलप्राजुयबलाः नाथयारेलाः हे सित संवर
 राः त्रीनं त्रीवै नैः भुवनयहाः त्रीनं त्रीभुवनयहाः
 धेजुलाः हे सित संवरः कलपोल भोः ॥५॥

स्वस्ति श्री गणेशाय नमो ॥ ५ मा गं गतं क रौ वं कं गतं
 रौ संः ॥ भुजा कं क नं सो प्रितं शुभ्र केतु ॥ गतं
 को फता स्वचि वंतंः ॥ नमो गान्तर्यं ग रौ सं न प्रसं
 ग रौ रौ क दंतं सुभ्र सर्व कार्यः ॥ सुभ्र सर्व कार्यः
 सुभ्र सर्व कार्यः

स्वस्ति श्री गणेशाय नमो ॥ ५ मा गं गतं क रौ वं कं गतं
 रौ संः ॥ भुजा कं क नं सो प्रितं शुभ्र केतु ॥ गतं

स्वस्ति श्री गणेशाय नमोः ॥ ५ मा गं गतं क रौ वं कं गतं
 भुजा कं क नं सो प्रितं शुभ्र केतु ॥ गतं
 फता स्वचि वंतंः नमो गान्तर्यं ग रौ सं न प्रसं
 सुभ्र सर्व कार्यः

स्वस्ति श्री गणेशाय नमोः ॥ ५ मा गं गतं क रौ वं कं गतं
 भुजा कं क नं सो प्रितं शुभ्र केतु ॥ गतं

स्वस्ति श्री राजकुमार
 नमो

१ त्वत्ति आगने सायन प्रो॥ उ मा गं गजं री कि सा द क्र
गण सं॥ भुजा कं क न सो मि तं ध्रु म् के तु गले हा रु
ता फ ला सो मि तं न मो जा न रु पं ग णे सं न मो ले
ग णे ले क द सं सं अ र्ध व का र्थ्यः स मं स न्मु सं श न
व सि द्धि म न रि तो तं का र्थ्य सि डि न व तं न मो वृ धि
का तं ग ने सं न मो ले ॥ २॥ म द्वा सं न रं सै क त वि द्वा
जं व तु र्भि भु जा मे क दं ते क र्वा र्ण ॥ ३ ॥ दं दै व रु यं

शं ति दि ना धं न मो आ ल वं दू ग रा सं न मो ले ॥ ३॥
सि रं सिं रं वं मं दे म व र्णः अ मं मो दं कं कृ प त
वि द्वा र जः मा हा सं क तं द दि तं ध्रु म् के तु न मो
रि पु न ग रा सं न मो ले ॥ ४॥ य था वा त कं द दि तं वि
जु ना मं स द्वा आ य ते सं क रं पा प ना सं स
जि तं र व त मु वं सो क ना सं न मो वि द्वा न रं ग न रं

राग अशुभते ॥ धं दे धं दे धं दे धं दे सरन चिम म म म म
वं धं दे धं दे धं ॥ ॥ अनुमालिय पुने नु मियर वल न
त सिं धं ॥ मगन कर ॥ त व स त सिं धं मु निले क स
जे ॥ धं दे ॥ ॥ आधि च लिय ह सिनगर ॥ भी कम वि
जे ॥ मन मे व परि भा व रा वि स कु माल ॥ ला यं ॥
धं दे ॥ ॥ २ ॥ ५

आ गी सा ता व न मो ॥ रा म व ली रागे ॥ वं द न रं वि त नि र व ल प
पि ता व रा व न मारे ॥ के लि व ली म नि ॥ कु न्द ल मं दि त ॥ गं ज
रा ग स मि ति सा रं ॥ १ ॥ ॥ हरि नि ह श्रु ध वा धु नि क ले ॥ प्र वि ला स नि वि
ला स पि षे नि प्र रे शं हरि ॥ ह श्रु ध वा धु नि को ॥ पि न प यो ध र मार
भ रे न ह ॥ ह रि परि रं ने स रा गं ॥ ग्व प्र व धु र नु गा यं ति वा रि दु
दं ॥ त प रं स गं ॥ २ ॥ ॥ हरि ॥ का पि वि ला स वि लो ल वि लो ॥ न ॥ वे ल न
ज मि त वि लो जं ॥ आ य ति श्रु ध व धु र धि कं म धा ॥ रुं न व र न स त
॥ ३ ॥ ॥ हरि ॥ का पि क पो ल ले मि रि ता ल पि ॥ तं वि म मि सु ति ॥ न ले वा

वृत्तं वनिः तं व व ति द यि ॥ तं प्र ल कै ल नु कु ले ॥ ५ ॥ हरि ॥ के ति क ल
 ३ तु ॥ के न व का रि दु मुं ज मु ना ज ल कु ले ॥ मं जु ल वं जु ल वं जु ल म
 ॥ क ॥ कृ ष क ले न दु कु ले ॥ ५ ॥ हरि ॥ क ल त ल ता ल ठ ॥ ल ज व
 ॥ क लि ट व ॥ रं ष न वं सा ॥ रा स ह से स ह नृ त्य प रा हरि ॥ ना जु व ति
 सं सो ॥ ६ ॥ हरि ॥ आ वे तिं का म पि तुं व ति का म पि २ का म पि रा म मा रा
 प स्थि ति र्म स पि त वा ह प रां म प ॥ रा म नु र्ग स ति वा मं ॥ ७ ॥ हरि ॥ अ ज म दे
 य क वे रि द मु दि तं ॥ के स व के ति ल हं से ॥ वि पि न नो द क ला व ति तं वि
 ट नो ॥ ८ ॥ तु लु ना रि य र्म स्य ॥ ८ ॥ हरि नि ह मु शु वा शु ति क रे प्र वि ता र्म

रा ग व सं तः वं द न वं यि त नि र्म क लो व र वि त व स न व न मा रः रा
 अ ग रो सा ग्रं न मोः ह र सि व सं ष र मा ठा दे उ वं भो प रु प ति ना थ सु दा सि
 व सं भुः मा र्गु जे सो रि थं ने जं ठ न ह प्र द स आ सि ल पा ७ ज वा गे
 म्प रि को ट रं ग जा ७ फु ल प्र ता द मा थ ल गा ७ प व ति न र र वि
 मा नि मा यिः प्रा सि ष दि दे मा हा रा जा ला यिः ह तं को दि दे वि मं त र रा
 भु प धि व भ ७ नु ता हाः ना थै स्व रि दे वि न वा नि को थ ॥ श्री जं
 ग कि ति मि थ कु रा निः ग व र ष ना थ म्भ गं व भोः स ते त्रि न ला य ला
 हो लाः जो ति स रू प दे ष म्भु नु ता हाः भ धि रं जि दे सि न वा नं न ला
 को भ ति वं दि या थः मा हा व द तं दे वि द्या ७ प्र ज्ञा

सते प्रदक्षु वृक्षानिलकंधः भूमिपुनर्गनिसव्याकितः श्रद्धादिन उता स
यनातिथः सतेजुगमाहाः जाहा तादंः कलिजुगमाहा कलिजुगमाहा
ठादंः सिधतपसिभगमागाउदंः विलाकोतितह रतिभयविस्म
कादुकाउतरभोजः जयरुद्रमाहादेवः नवलिंगसारः ॥ १ ॥
तिनितेप्रस्नानग्यकथोस्वरकाशरजपभानः धनेसिपुत्रिपुत्र
नवरः वाघपुत्रालसुं नरिजालः स्वात्ममतिगतं वंकागस्यनः मनमा
माहादेउः धनेमनिरुरः जगतविमातावज्जोनिः माहाकालभ
रिवः माहादेउपोषरिः पलावोक्काभगवतिजयवन्दे स्वरिः दुजे दोला

तनितेप्रस्नानः धनेस्वरमाहादेउवनयाभानः किलेस्वरुप्रायाव
हंदेप्रफिउः धतेयथाउन्नभागः लक्षसुर्वनवरदानपाउप्रासिषयाउः
वागुनारायनसेकालगाउः कालभयिरवसवकोहिप्रायाः वाग्रंदेवि
जयमाहामायाभातगाउतलेउसुर्जविनायकः प्रतिलिनेस्वरका
रसनमाउः पुरुप्रवतारकामधेनुगानिः विस्वंगुमाहा ॥ २ ॥
नामिकोदेविनवानिकोभानः सतेकादेविवंदिजोधि रतिभयविस्म
नकिं विनति कलुं तमकरजोरिः सिंघाठमेलापये स्वदाह ॥ ३ ॥
ईनपरनंतः फूलवोकिदेविरक्षागरः देवि नवानिजमपिधकनिधि